आडियो द्वारा शिक्षा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा स्वीकृत एम0ए0 हिन्दी के मॉडल सिलेबस पर आधारित व्याख्यान माला। ये व्याख्यान माला भारत सरकार की बेवसाईट डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू डाट साक्षात डाट ए सी डाट आई एन पर उपलब्ध है जिसमें वीडियों के साथ साथ आलेख भी समावेशित है।

आडियो द्वारा शिक्षा व्याख्यान माला के अन्तर्गत सुनिये एम0ए0 हिन्दी अंतिम वर्ष के पाठ्यक्रम उत्तरोतर कविता के अंतर्गत गिरिजा कुमार माथुर पर व्याख्यान। व्याख्यान दे रहीं हैं दिल्ली यूनीवर्सिटी के हिन्दी विभाग की एसोसिए प्रोफेसर डा0 कुमुद शर्मा।

छात्र –   नमस्ते मेम।

डा0 कुमुद शर्मा– नमस्कार, पहले सत्र की पहली कक्षा में छात्र मित्रों आप का बहुत बहुत स्वागत है (धन्यवाद, धन्यवाद मेम) तो मुझे आज पढ़ाना है आपको गिरिजा कुमार माथुर की कविता '15 अगस्त' । (15 अगस्त, जी मेम) गिरिजा कुमार माथुर इससे पहले कभी आपने उनकी कविताओं को पढा है, उनके साहित्य को जाना है कभी (जी मेम) क्या पढा है उनका। (मेम हमने उनकी कविता 'छाया मत छूना') बहुत सुन्दर गीत है उनका हूँ। कैसा लगा (बहुत अच्छा) और किसी ने पढ़ा (नहीं मेम) नहीं पढ़ा । तो पहली बार आप गिरिजा कुमार माथुर, रूचिका को छोड़ करके और सारे लोग पहली बार (जी मेम) इनकी विता पढ़ेगें। (जी मेम) तो हम चाहेगें कि कविता पढ़ाने से पहले थोड़ा सा संक्षिप्त परिचय मैं उनका आपको दे दूं। हालांकि दो तरीके हैं (जी) एक ये है कि रचनाकार को जानने के बाद हम उनके साहित्य में प्रवेश करते हैं (जी मेम) और कई बार होता है कि साहित्य के माध्यम से हम रचनाकार को जानते हैं (जी मेम) हैं ना दोनो तरीके से अपनाये जा सकते हैं, अध्ययन के लिये, अध्यापन के लिये लेकिन आज मैं चाहूंगी कि मैं चूंकि अब तक जिस

तरह की कविताएं आप पढ़ते आये हैं, आप भक्ति कालीन कविता को पढ़ते आये हैं, रीतिकालीन कविता को आप पढ़ते आयें। तो एक परम्परागत ट्रेण्ड की कविता है। लेकिन अब ये जो सिलेबस है आपके कोर्स का उसमें एक नये ट्रेण्ड की कविता है। आजादी के उसके बाद की कविताएं हैं तो हम चाहेगें की पहले कवि का थोड़ा सा परिचय किस ट्रेंड के कवि हैं किस युग के कवि हैं (जी) और उनकी कुछ विशिष्टाएं (जी) उसके बाद हम कविता को, कविता पढ़ेगें (जी मेम)।

गिरिजा कुमार माथुर की जो पहचान है साहित्य में, आधुनिक हिन्दी साहित्य में, वो एक भावप्रण गीतकार और कुशल शिल्पकार की हैं पहचान, उनकी (यस मेम) और एक भाव प्रण गीतकार के रूप में कुशल शिल्पकार के रूप में, वो अपनी इस रचनात्मक उपस्थिति दर्ज करते हैं (जी) साहित्य में और वो जब साहित्य में उतरते हैं तो कविता के लिये एक नई जमीन को तलाश करते हुये वो आते हैं । (जी मेम) और उनमें एक ललक है किस तरह से कविता के लिये नया मुहावरा तलाश किया जाये (यस मेम)। कविता के लिये नई जमीन तलाश की जाये (यस मेम) तो ये वो दौर था गिरिजा कुमार माथुर की कविताएं जब आती हैं । जब कि छायावाद की प्रतिक्रिया स्वरूप प्रकृतिवाद का अभियान जोरों पर था। (यस मेम) और बात की जा रही थी कि अम्बर की बात हमें नहीं करनी हमको इस धरती की बात करनी है। सामाजिक यथार्थ की बात करनी है (जी मेम) और वो अन्वेशी कविता के विकास क्रम का दौर था यानि कविता के क्षेत्र में नये नये अन्वेषण का दौर था (जी) की नये विषय आने चाहिए कविता में (जी मेम)। नया शिल्प आना चाहिए (जी) तो इस दौर में गिरिजा कुमार माथुर आते हैं और गिरिजा कुमार माथुर कविता के माध्यम से जीवन को पहचानने की कोशिश करते हैं जानने की कोशिश करते हैं। बृहत्तर जीवन संदर्भो से जुड़ करके बहुत विशाल अनुभव सम्प्रदा है और उस अनुभव सम्प्रदा के माध्यम से वो कविता को रचते

हैं। (यस मेम) कविता को रचने का दावा करते हैं कि उनकी कविता बृहत्तर जीवन संदर्भों से जुड़ करके आगे चलती है। (जी मेम) कहां से शुरूवात करते हैं गिरिजा कुमार माथुर, गिरिजा कुमार माथुर शुरू करते हैं छायावादी संस्कारों से। क्योंकि शुरूआत का काल उनका वहीं था। (यस मेम, जी मेम) छायावाद में वो निराला से प्रभावित होते हैं , पंत से प्रभावित होते हैं, प्रसाद से प्रभावित होते हैं। तो छायावाद का प्रभाव उन पर पड़ता है। (जी मेम) छायावाद से वो क्या लेते हैं प्रेम और सौन्दर्य। छायावाद की विशिष्टताः है ना प्रेम और सौन्दर्य । तो छायावाद से प्रेम और सौन्दर्य की बारीकियां ले करके वो कविता का प्रणयन शुरू करते हैं। (जी मेम) फिर उसके बाद दौर आता है प्रगति, प्रयोग और नई कविता का (जी मेम) तो फिर वो लेते हैं अप्रतिबद्व सामाजिकता का दर्शन । उसकी संकल्पना उनकी खुद की है। क्या है अप्रतिबद्व सामाजिकता का दर्शन यानि वो समाज सामाजिक विषमता की बात करते हैं। सामाजिक दैन्य की बात करते है। सामाजिक असमानता की बात करते हैं लेकिन किसी एक किसी विशेष कोई खास विचारधारा को अपने को कैदी नहीं बनाते (जी मेम) कि किसी राजनैतिक विचारधारा का कैदी बना करके सामाजिक विषमता की बात करते हों वो ऐसा नहीं करते बल्कि एक मानवीय परिपेक्ष्य में वो सामाजिक विषमता की बात करते हैं यही है उनका अप्रतिबद्व सामाजिकता का दर्शन । (जी मेम) उसके बाद प्रगति और प्रयोगवाद के दौर से गुजरते हुए नई कविता की जो अपार सामर्थ्य है उससे जुड़ करके वो अपना एक वैशिष्ठ निरूपित करते हैं (जी मेम) उनकी कविता में क्या आता है आधुनिक वहाव बोध, राग बोध, इतिहास बोध, मूल्यों की संक्रांति और वैज्ञानिक नये स्वर। ये सब उनकी कविता को विशिष्टता प्रदान करते हैं । (जी मेम) और जहां तक जीवन की हम बात करें थोड़ा सा साहित्य परिचय से पहले मैं थोडा सा जीवन का भी आपको बात दूँ वैसे। तो बहुत आत्मीय हो जाता है कवि अब जब जीवन के बारे में भी जानते हैं उनके । वो पैदा होते हैं मध्य प्रदेश में 22 अगस्त 1919 को और मध्य प्रदेश में ही बी0ए0 तक की

शिक्षा ग्रहण करते हैं ग्वालियर से। उसके बाद लखनऊ जाते हैं पढ़ने के लिये। जीविका के लिये जब वो संघर्ष करते हैं तो वो आकाशवाणी से जुडते हैं, दूरदर्शन से जुड़ते हैं या तक कि संयुक्त राष्ट्र संध में वो अमेरिका में हिन्दी पदाधिकारी के रूप में भी जाते हैं (जी मेम) और दूरदर्शन में उपमहानिदेशक के पद तक पहुंचते हैं । भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद की एक पत्रिका है बहुत महत्वपूर्ण पत्रिका है गद्यनांचल, उसके संपादक भी वो रहते हैं । (जी मेम) तो एक थोडा सा जीवन परिचय है इनका, जहॉ तक साहित्यिक व्यक्तित्व इनका कैसे बनता है, कैसे निर्मित होता इनका साहित्यिक व्यक्तित्व ये भी अपने आप में महत्वपूर्ण है। तो उनको जो साहित्य की पृष्ठभूमि अपने परिवार से मिलती है और पहले हमेशा होता था कि परिवार में बहुत सारे हमारे जो साहित्य की बहुत महत्वपूर्ण कृतियां हैं हर परिवार में होती थी तो वहां से उन्हे एक साहित्यिक प्रेरणा मिलती है और उसका पठन पाठन वो शुरू कर देते हैं साहित्य का। (जी मेम) मध्य प्रदेश की भूमि अगर देखें तो, मध्यप्रदेश का प्राकृतिक वैभव और सांस्कृतिक वैभव जो है किसी से मुझे नहीं लगता कि कोई व्यक्ति उससे अंजान होगा। कोई गया है यहां मध्यप्रदेश । देखा है (नहीं) नहीं हैं तो अगर कोई भी कवि ऐसे किसी प्रदेश से है जिसमें प्राकृतिक सुषमा बिखरी पड़ी है तो उसकी कविता में जरूर आती है। पन्त अगर कौसानी, तो कौसानी जरूर आती है उसका सौंदर्य (जी मेम) तो इसी तरह से मध्य प्रदेश का जो एक प्रकृति का सौन्दर्य है संस्कृति का जो सौन्दर्य है वो उनकी कविताओं में झांकता बराबर दिखाई पडता है। (जी मेम) और कविता की शुरूवात बहुत कम उम्र में करते है । आपको मालूम है मैंने आपको इनके जन्म का समय क्या बताया (22 अगस्त 1919) वैरी गुड आपको याद भी हो गया (जी) और 1938 में एक काव्य सम्मेलन होता है और उस कवि सम्मेलन में गिरिजा कुमार माथुर मंच पर होते हैं (जी) और मंच पर वो एक कविता पढ़ते हैं किसी का विदाई समारोह है कि 'दो क्षण ही तो मिल पाये हम, और विदा की बेला आई' जब पढते हैं तो पूरे जितने भी लोग वहां

मौजूद थे उनको पता लग जाता है कि ये कवि बन करके उभरने वाला है। यानि इस गीत से उनकी काव्यात्मक प्रतिभा जो है उसका परिचय लोगों को मिल जाता है श्रोताओं को । (जी मेम) और जो कि सही भी साबित होता है। बाद में उनकी कविता तार सप्तक में प्रकाशित होते हैं । तार सप्तक का प्रकाशन किसने किया था मालूम है आपको (अज्ञेय ने) अज्ञेय ने, और तार सप्तक में किसी की कविताएं शामिल होना बहुत महत्वपूर्ण बात थी । (जी मेम) उसके बाद इनकी कविता यात्रा शुरू होती है 'मंजरी' से मंजरी इनका पहला कविता संग्रह है। उसके बाद बहुत सारे कविता संग्रह आते हैं इनके। अन्त तक वो सिलसिला कविता संग्रह प्रकाशित होने का थमता नहीं है। इन्होने नाटक भी लिखा, आलोचना की पुस्तक भी लिखी है। मैं चाहूंगी कि आप इनकी रचनाओं के नाम नोट कर लीजिए ताकि आप लाइब्रेरी में जा के इनके कविता संग्रह को पठिये क्योंकि केवल जो आठ दस कविताए आपके कोर्स में हैं उनको न पढकर के और भी कविताओं को जब आप उनको पढ़ेगें तो एक समग्र रूप में एक कवि को आप पहचान सकेगें। (जी मेम) तो मैं चाहूंगी कि आप नोट कर ले कविताएं (यस मेम) दिखाई दे रहा है सबको (यस मेम) पहला कविता संग्रह है इनका जैसा हमने बताया शुरू किया था। इन्होने मंजरी से, दूसरा है 'नाश और निर्माण', लिखावट समझ में आ रही है राइटिंग आपको (जी मेम, यस मेम) 'धूप के धान', नेक्स्ट है 'शिला पंख चमकीले जो बंध नहीं सका', नेक्स्ट 'भीतरी नदी की यात्रा', 'छाया मत छुना मन' रूचिका तुमने जो गीत पढ़ा है इसी संग्रह से था (जी मेम) 'साक्षी रहे वर्तमान' देखिये कि कविता संग्रहों के शीर्षक भी कितने अच्छे हैं (यस मेम) फिर 'कल्पान्तर में' नेक्स्ट है 'मैं वक्त के हूँ सामने', मुझे और अभी कहना है' ठीक है फिर 'पृथ्वी कल्प' ये नोट कर लिया आपने (यस मेम) यहां तक 'पृथ्वी कल्प' के बाद उनका एक नाटक प्रकाशित हुआ 'जनम कैद' ठीक है और आलोचना की पुस्तक आती है, हैं उनकी नई कविता 'सीमाएं और सम्भावनाएं ' ये किताब आप जरूर पढ़ेगें (जी मेम) क्योंकि नये कवि आपके कोर्स में हैं

और नई कविता के पलक को उसकी सीमाएं क्या हैं, क्या उस पर आरोप लगे नई कविता को प्रतिष्ठापित होने में, क्या दिक्कते आयीं ये सब कुछ आपको इस किताब में मिलेगा तो बहुत उपयोगी किताब है आपके लिये इसको जरूर पढ़ना है आपको (जी मेम) और बाकि जितना आप पढ़ सकते हो उनको जरूर पढ़ियेगा (यस मेम) तो आपने देखा कि कविता से शुरू करके वो नाटक और आलोचना तक जाते हैं (यस मेम) तमाम विद्याओं में लिखते हैं । लेकिन उनकी रचना संसार का जो मूल उत्स हैं, मूल क्या है वो कविता है, कवि के रूप में यानि नई कविता के प्रमुख हस्ताक्षर के रूप में वो अपनी पहचान बनाते हैं साथ ही इस ये किताब भी उन्हे प्रतिष्ठापित करती है किस रूप में नई कविता के बुनियादी सिद्वान्तकार के रूप में। तो इनकी पहचान क्या बनती है गिरिजा कुमार माथुर की नई कविता के श्रेष्ठ रचनाकार और नई कविता के बुनियादी सिद्वान्तों के व्याख्याकार। (यस मेम) अगर हम गिरिजा कुमार माथुर की मूल काव्य दृष्टि की जब बात करें तो मूल काव्य दृष्टि में आप पायेगें मूल्यों की संक्धांति इनकी कविता में मिलेगी, आधुनिक भाव बोध आपको मिलेगा, इतिहास की पीड़ा मिलेगी और एक नई वैज्ञानिक सोच जो है वो कविता में आपको मिलेगी यानि पारम्परिक कविता से अलग बिल्कुल नये विषय इनकी कविता में समाहित हैं। आजादी के बाद जो एक परिवर्तन होता है समाज में, राजनैतिक स्तर पर, आर्थिक स्तर, सामाजिक स्तर पर, उस परिवर्तन को वो समेटते हैं लेकिन अगर हम इनकी बात करें तो गिरिजा कुमार माथुर पर आरोप भी कम नहीं लगें हैं इनको कहा गया क्योंकि मंजीर और उनका जो दूसरा कविता संग्रह है नाश और निर्माण अगर हम देखें तो मूलतयाः इसमें प्रकृति और रूप का सौन्दर्य है तो रोमांस की कविता है तो ये मान लिया गया कि गिरिजा कुमार माथुर जो हैं वो एक भावप्रण गीतकार हैं और प्रेम की बात करते हैं रोमान्स की बात करते हैं तो ये मूलतयाः प्रेम, सौन्दर्य, रूप, रस, गंध, देह के कवि हैं तो होता यह है कि साहित्य जगत में कि शुरूवात जैसे कवि करता तो उसी रूप में उसकी

पहचान बनने लगती है और एक ठप्पा उस पर लग जाता है (जी मेम) तो गिरिजा कुमार माथुर पर भी यहीं हुआ, ये मान लिया गया कि ये तो प्रेम, रोमान्स, रूप, रस, गंध देह के कवि है लेकिन छात्र मित्रो अगर आप उनके पूरे रचना संसार पर गौर करें समूची काव्य यात्रा पर अगर आप गौर करें तो पहले दो संग्रह उनके मंजीर और नाश के निर्माण शुरूवाती दौर की जो कविताएं हैं उन पर तो ये आरोप सिद्व हो सकता है लेकिन बाद की जो कविताएं है उन पर ये आरोप सिद्व नहीं होगा। क्योंकि बाद में हमने देखा अगर आप पढिये इनको तो वो एक व्यक्तिक सीमा को लांधकर के प्रेम और रोमांस के घेरे को तोड़ करके वो सामाजिक भाव उन पर पहुंचाते हैं (जी मेम) यानि रोमानी आग्रह से मुक्त हो करके सामाजिक भाव बोध की बात कवि करता है। वहां वो एक सीमित दायरा जो है उसको उस प्रेम को तोड़ता है और पूरी जरह से आ करके एक कविता को व्यापक जन्म देता है । अपने काव्यानुभव को व्यापक फलक पर ले जाता है जहां समाज है, मनुष्य है, देश है यानि समूचा जो है एक परिवेश, व्यापक परिवेश कविता में, कविता की बुनावट में समाहित होता है (जी मेम) और इनकी विशेषता ये है कि आजादी के बाद जो असमंजस की मानसिकता है विकृति है और एक संत्रास बोध की जो पीडा है उसका पूरा फैलाव जो है आपको गिरिजा कुमार माथुर की कविता में मिलेगा। हालांकि ये बात अलग है कि इनकी कविता बहुत लाउड नहीं होती। समस्या आती है लेकिन बहुत लाउड नहीं होते, बहुत आक्रोश इसमें नहीं दिखाई देता। लेकिन वो सामाजिक जो विषमताएं है उनको एक समस्या के रूप में व्यंजित कर देते हैं । खासियत ये है कि अगर इनकी कविता में समाज में जो विषमताएं है दीनता है या जो असमानता है उसके कारण हताशा है, निराशा है, अनास्था है लेकिन अनास्था, हताशा इनकी कविता का मूल स्वर नहीं है वो अनास्था से आस्था की यात्रा करते हैं आस्था तक जाते हैं। उनको यह मालूम है कि धूप जो है किसी भी कोने से कहीं भी किसी भी सुराग से छन करके हम तक पहुंच जायेगी (पहुंच जायेगी) इस तरह

की बात आपको उनकी कविता में दिखाई देगी तो इनकी कविता में हम देखेगें कि मानव की प्रतिष्ठा है, मानवीय व्यक्तित्व की प्रतिष्ठा है। मानवीय व्यक्तित्व के साथ साथ समृष्टिगत यानि समाज समाजवादी मूल्य भी आपको वहां मिलेगें। तो समाज से, व्यक्ति से वो समाज तक जा करके जुडते है और सबसे बडी बात क्या है कि मानवीय मूल्यों के प्रतिष्ठाता है। मानवतावाद आपको इनकी कविता में दिखायी देगा। उन मूल्यों का संरक्षण करना चाहते हैं जो एक मनुष्य को दूसरे मनुष्य से जोड़ता है (जी मेम) आज तो आपने देखा कि टेक्नीक एक मनुष्य को दूसरे मनुष्य से जोड रही है (जी मेम, यस मेम) संवेदना खत्म हो गयी हैं (यस मेम) लेकिन गिरिजा कुमार माथुर जैसे कवि जो हैं मनुष्य के भीतर की जो आंतरिक संवेदना है संबंधो की जो गरमाहट हैं, संबंधो की जो ऊष्मा हैं उसको बचाये रखना चाहते हैं हालांकि वो देख रहे हैं कि सामाजिक यथार्थ को भी देख रहे हैं उसका चित्रण कर रहे हैं। लेकिन फिर भी वो निराश नहीं है जहां कहीं भी उन्हें आस्था दिखायी पड़ती है आस्था की लौ दिखायी पड़ती है उस आस्था की लौ को वो कविता में जलाये रखना चाहते हैं (यस मेम) तो ये इनकी कविता की जो अन्तर्वस्तु है उसका एक थोड़ा सा खाका मैने आपके सामने खींचा। जहॉ तक शिल्प की बात है । एक बात मैं आपको बता दूॅं इस स्तर पर आ करके आप पहले की तरह से कि ये भाषा है ये शैली है इस तरह से आप प्रशिक्षण नहीं करते हैं क्योंकि भाषा, शिल्प या अन्तर्वस्तु अपने आप में बहुत संश्लिष्ट हो, रेशे रेशे करके हम उसको नहीं देख सकते और लेकिन मैं कहूंगी की क्राफट जो है गिरिजा कुमार माथुर की कविता का बहुत कसा हुआ है अन्तर्वस्तु के साथ उसका तालमेल बहुत जबरदस्त है। कुशल भाषा के कुशल संयोजक की भूमिका में आते हैं संगीत है उनकी कविता में अगर आप देखें, गीतकार तो हैं ही वो (हां जी मेम) और अर्थ की तमाम ध्वनियां हैं नये अर्थ आप उसमें, जितनी बार उनकी कविता को आप पढ़ियें तो अर्थ अनन्त है कई अर्थ उसमें से निकलेगें आपके सामने, तो अन्तर्वस्तु की दृष्टि से भी और अगर आप देखें

भाषा का जो संयोजन है कुशल शिल्पकार की हैसियत से उनकी कविता में प्रवेश करना अपने आप में बहुत सुखद अनुभव होता है। (यस मेम, जी मेम) तो अब फिलहाल एक बहुत छोटा सा परिचय मैने आपको दिया कवि का और उनकी कविताओं का। विस्तार से हम इनसे संदर्भित प्रश्नों पर बाद में जब मैं सारी कविताएं आपको पढ़ा लूंगी। उसके बाद की कक्षाओं में हम इनसे संदर्भित प्रश्नों पर विस्तार से चर्चा करेगें। (जी मेम) आज कविता में प्रवेश करने से पहले मुझे लगता है कि इतना परिचय आपके लिये काफी ठीक ठाक (जी मेम) समझ में आया कुछ आपको (यस मेम, बहुत अच्छा) तो हम अब कविता का पाठ करते हैं (यस मेम) कविता का पाठ मैं नहीं करूंगी, कविता का पाठ लक्ष्मी शंकर बाजपेयी जी वो आपके लिये इस कविता का पाठ करेगें। (जी मेम) बहुत ध्यान से आप इस पाठ को सुनियेगा फिर मैं आपसे बात करूंगी उसे बाद हम कविता शुरू करेगें (जी मेम)

आज जीत की रात पहरूए सावधान रहना
आज जीत की रात पहरूए सावधान रहना
खुले देश के द्वार अचल दीपक समान रहना
आज जीत की रात पहरूए सावधान रहना
खुले देश के द्वार अचल दीपक समान रहना
पहला अंतरा है –
प्रथम चरण है नये स्वर्ग का
प्रथम चरण है नये स्वर्ग का है, है मंजिल का छोर
प्रथम चरण है नये स्वर्ग का है, है मंजिल का छोर
इस जन मंथन से उठ आयी पहली रत्न हिलोर
इस जन मंथन से उठ आयी पहली रत्न हिलोर
अभी शेष है पूरी होना
अभी शेष है पूरी होना जीवन मुक्ता डोर
क्योंकि नहीं मिट पायी दुख की

क्योंकि नहीं मिट पायी दुख की विगत सांवली कोर
क्योंकि नहीं मिट पायी दुख की विगत सांवली कोर
ले युग की पतवार
ले युग की पतवार बने अम्बुदी महान रहना, पहरूए सावधान रहना
आज जीत की रात पहरूए सावधान रहना
खुले देश के द्वार अचल दीपक समान रहना
विषम श्रंखलाएं टूटी हैं खुली समस्त दिशाएं
विषम श्रंखलाएं टूटी हैं खुली समस्त दिशाएं
आज प्रभंजन बनकर चलती युग वंदिनी हवाएं
आज प्रभंजन बनकर चलती युग वंदिनी हवाएं
प्रश्न चिंह बन खड़ी हो गयी ये सिमटी सीमाएं
प्रश्न चिंह बन खड़ी हो गयी ये सिमटी सीमाएं
आज पुराने सिंहासन की टूट रही प्रतिमाएं
आज पुराने सिंहासन की टूट रही प्रतिमाएं
उठता है तूफान, उठता है तूफान इन्दु तुम दीप्तिमान रहना
उठता है तूफान, इन्दु तुम दीप्तिमान रहना, पहरूए सावधान रहना
आज जीत की रात पहरूए सावधान रहना
खुले देश के द्वार अचल दीपक समान रहना
अंतिम है –
ऊॅची हुई मशाल हमारी आगे कठिन डगर है
ऊॅची हुई मशाल हमारी आगे कठिन डगर है
शत्रु हट गया लेकिन उसकी छायाओं का डर है
शत्रु हट गया लेकिन उसकी छायाओं का डर है
शोषण से मृत है समाज, शोषण से मृत है समाज कमजोर हमारा घर है
किन्तु आ रही नई जिन्दगी ये विश्वास अमर है
किन्तु आ रही नई जिन्दगी ये विश्वास अमर है

जन गंगा में ज्वार, जन गंगा में ज्वार लहर तुम प्रवहमान रहना
जन गंगा में ज्वार, लहर तुम प्रवहमान रहना
पहरूए सावधान रहना
आज जीत की रात पहरूए सावधान रहना
खुले देश के द्वार अचल दीपक समान रहना

कविता आपने सुनी (जी मेम) कैसी लगी आप लोगों को (जी बहुत अच्छी लगी) बहुत अच्छी लगी (जी मेम) तो जव भी श्रोता की हैसियत से या मैं कहूॅं छात्रों की हैसियत से भी आप ने इस कविता के पाठ को सुना। तो श्रोता भी हैं और आप आज विद्यार्थी भी हैं (यस मेम) तो सुनने के बाद अक्सर ये होता है कि कविता जब हम सुनते हैं तो आनन्द आता है (जी) और एक बड़ा आत्मीयता सा रिश्ता कविता के साथ बनता है और कविता का अर्थ मतलब मूल रूप में भले ही न समझ में आये लेकिन कहीं न कहीं उसका प्रभाव जो है मस्तिष्क पर पडता है (जी) तो मैं आपके बीच से जानना चाहूंगी कि कौन सा अर्थ आपको कविता का समझ में आया या एक नजर में क्या प्रभाव कविता आपके उपर छोड गई, रूचिका ।

रूचिका – मेम हमें कविता सुनकर के बहुत अच्छा लगा और एक दम हम उसमें खो गये थे।

डा0 कुमुद शर्मा – अर्थ पकड़ में आया (जी मेम) क्या अर्थ पकड़ में आया।

रूचिका – इसमें मेम बात की गयी है कि जहां तक मुझे समझ में आया है कि नई कविता के साथ गिरिजा कुमार माथुर जुडे हैं तो इस कविता में कहीं न कहीं मुझे लगता है कि आजादी के बाद जो सच्चाई होनी चाहिए थी जो हम लोगों ने ख्याब देखे थे वो पूरे नहीं हुये थे मोह भंग की एक स्थिति सी नजर आती है।

डा0 कुमुद शर्मा– चलिए मैं बताऊंगी और कोई बता सकता है कुछ, नहीं (नहीं) 15 अगस्त– पाठ आपने सुना (यस मेम) अब चार चार पंक्तियों का पाठ

मैं करूंगी और साथ में उसकी व्याख्या करूंगी। ये कविता एक बात जान लीजिए नई कविता के संदर्भ में कि नई कविता कोई विशेष कविता जो आप पढ़ रहे हैं उस कविता का सन आप जान लेतें किस समय लिखी गयी है युगेन संदर्भो को जब आप जान लेते हैं तो कविता का अर्थ खोलने में आसानी होती है (यस मेम) यू भी कविता के लिये कहा जा रहा है आज भी की कविता संकट में, कविता दुरूह होती चली जा रही हैं और कविता को समझने के लिये एक मानसिक व्यायाम की जरूरत पड़ती है। अगर आप युगेन्द्र संदर्भ को समझ लेते है कब कविता लिखी गयी ये समझ लेते हैं तो कविता का अर्थ आसानी से समझ में आता है (जी मेम) मैं पढ़ रही हूॅं – आज जी की रात ध्यान कीजिये आप खुद समझ जायेगें किस समय लिखी गयी है आज जीत की रात, पेहरूए सावधान रहना, खुले देश के द्वार अचल दीपक समान रहना – बताइये कब लिखी गयी है (15 अगस्त को) 15 अगस्त 1947 पहली पंक्ति से ही स्पष्ट है कि कविता कब लिखी गयी है आज जीत की रात यानि स्वाधीनता प्राप्ति का जो दिवस था 15 अगस्त जो ऐतिहासिक दिन है उस ऐतिहासिक दिन की रात को कवि यह कविता लिख रहा है (जी मेम, यस मेम) और जाहिर है कि आजादी मिली है चारों तरह आजादी का हर्षोल्लाष छाया होगा (जी मेम) हर व्यक्ति जो है यानि एक लम्बी यातना झेलने के बाद, संघर्षो का एक अनवरत सिलसिला झेलने के बाद आजादी मिली है कितनी कुर्बानियों के बाद आजादी मिली है कितने बलिदानों के बाद आजादी मिली है तो उस हर्षातिरेक का आप अनुमान लगा सकते हैं कि कितना हर्षातिरेक चारों तरफ जन समुदाय के बीच से उमड़ रहा होगा। उसको कवि देख रहा है और उसको देखने के बाद, कवि ने एक तरफ वो देख रहा है कि स्वाधीनता का उल्लास है लेकिन उस उल्लास में वो बिल्कुल डूब नहीं जाना चाहता। उल्लास के साथ उसमें चिन्ताओं का अम्बार भी है (जी मेम) और वो देश को देश वासियों को उनका जो कर्त्तव्य है जो दायित्व है उसके प्रति सजग कर देना चाहता है (जी मेम, यस मेम) तो उस पूरी

कविता में आपको दो फलक मिलेगें। उस पर क्या है एक तरफ उल्लास है और दूसरी तरफ चिन्ता है दोनुर बिन्दु है इस कविता के उल्लास और चिन्ता (चिन्ता) । उल्लास इस लिये है देश आजाद है और चिन्ता इस लिये है कि आजाद तो हो गया है देश लेकिन अभी बहुत सारी समस्याएं है जिनसे हमें निपटना है देश के सामने बहुत सारी चुनौतियां हैं (यस मेम) आज जीत की रात पहरूए सावधान रहना खुले देश के द्वार अचल दीपक समान रहना। यानि स्वाधीनता प्राप्ति की रात है पहरूवे नवीन भारत का पेहरूवा कौन हो सकता है किसके लिये आया है, पहरूवे, पहरूवे किस को कहते हैं, पहरा देता है पहरेदार जो होता है यहॉ किस को संबोधित है किस को लक्ष्य कर रहे हैं गिरिजा कुमार माथुर । पेहरूवे सावधान रहना (युवाओं को) हां, नवीन भारत का जो पेहरूवा है, नवीन भारत है ना आजादी के बाद का (यस मेम) तो नवीन भारत का पेहरूवा देश के कर्णधार होगें हमारा नवयुवक होगा, उन सब को वो चेता रहे हैं उनमें एक जागरण की चेतना भर देना चाहते हैं पेहरूवे सावधान रहना। यानि आपको अतिरिक्त सजगता की जरूरत है। यानि एक सजगता थी आजादी के पहले की, एक जागरण आजादी के पहले का था और अब भी आपको सचेत रहने की जरूरत है सावधान रहने की जरूरत है। खुले देश के द्वार अचल दीपक समान रहना, खुले देश के द्वार का मतलब (आजादी मिली थी) आजादी मिली थी पराधीनता की बेड़ियां कट गयी है, पराधीनता की बेडियां टूट गयी हैं। देश जो है लम्बी गुलामी से आजाद हो गया है अचल दीपक समान रहना – लेकिन इस स्वत्रंत भारत में आपकी स्थिति क्या होनी चाहिए – वो स्थिति होनी चाहिए, अचल दीपक समान रहना। दीपक की लौ टिमटिमाती भी है थपेड़ो से दीपक बुझ भी जाता है लेकिन आपको दीपक कैसा रहना जो रोशनी देता रहे। यानि आपको अपने व्यक्तित्व को इस तरह से बना देना है कर्त्तव्य बोध की चेतना आप में ऐसी होनी चाहिए कि वो उसकी लौ कभी भी बुझे नहीं। और बराबर आपको अपने जीवन अपने महत्वपूर्ण प्रद से देश को समृद्व करते हुए चलना है। स्पष्ट हो रही है (यस

मेम) कहीं न समझ में आये तो मुझे रोक के पूछ लीजिएगा, बिल्कुल (जी मेम) प्रथम चरण है नये स्वर का हैं मंजिल का छोर इस जन मंथन से उठाई पहली रत्न हिलोर, अभी शेष है पूरी होना जीवन मुक्ता डोर क्योंकि नहीं लिख पायी दुख की विगत सांवली कोर – बहुत सुंदर पंक्तियां हैं तो आजादी के साथ हमने सपने देखे थे (जी) बहुत सुनहरे स्वपन थे कि आजादी मिल जायेगी तो बिल्कुल स्वर्ग होगा। (जी) है ना, स्वर्ग की परिकल्पना थी कवि ये कह रहा है कि आजादी हमें मिल गयी है लेकिन ये पहला चरण है स्वर्ग का, अभी मंजिल का छोर – मंजिल अभी दूर है यानि हमारे कर्त्तव्य की इतिश्री यहीं पर नही हो जाती, आजादी हमने प्राप्त कर ली यही हमारा कर्त्तव्य बोध खत्म नहीं हो जाता। इस जन मंथन से उठाई पहली रत्न हिलोर – जो जन मंथन था एक व्यापक स्तर पर देश के जन आन्दोलन हमने खड़ा किया स्वाधीनता आन्दोलन, इतना बड़ा आन्दोलन। तमाम सारे नेतृत्व में वो खड़ा हुआ तो उस जन आन्दोलन से पहला रत्न हमें मिला है यानि की हमने जो सामूहिक एकजुटता दिखायी स्वाधीनता आंदोलन के दौरान पूरा देश एक हो गया उस एकजुटता से क्या मिला है हमें पहला रत्न मिला है वो आजादी की वजह से लेकिन अभी शेष है पूरी होना जीवन मुक्ता डोर– लेकिन अभी तो हमें इस देश को सजाने के लिये तरह तरह के और मोती चाहिए, मूल्य चाहिए और बहुत कुछ चाहिए ताकि हम एक पूरी मोती हम पिरो सके क्योंकि नहीं मिट पायी दुख की विगत सांवली कोर – क्योंकि दुख की जो सावंली कोर है वो अभी तक मिट नहीं पायी है यानि आजादी हमें मिली हैं लेकिन एक यातना जो हमने झेली है और जिस तरह से देश कमजोर हुआ है वो सारी समस्याएं अभी नहीं मिट पायी हैं । ले युग की पतवार बने अम्बुदी महान रहना, पेहरूवे सावधान रहना – युग की पतवार ले करके यानि इस युग को खेना किस को है वो नवीन भारत का पहरूवा है परतंत्र भारत का जो पेहरेदार है हमारा नवयुवक है हमारे कर्णधार है उनको कह रहा है कि युग की पतवार आप ले करके आगे बढ़ो और अम्बुदी के समान, सागर के समान विशाल आपमें

गहराई हो, गहराई हो ये जो जीवन को नापने की गहराई हो। जीवन को आप समा सके अपने भीतर उससे जुड सके। पेहरूवे सावधान रहना, एक सचेत रहने की जरूरत है अतिरिक्त सचेकता की जरूरत है। विषम श्रंखलाएं टूटी हैं खुली समस्त दिशायें, आज प्रवंजन बनकर चलती युग बंदिनी हवायें, प्रश्न चिन्ह बन खडी हो गयी यह सिमटी सीमाएं, आज पुरानी सिंहासन की टूट रही प्रतिमाएं, उठता है तूफान इंदु तुम दीप्तिमान रहना, पेहरूवे सावधान रहना – विषम श्रंखलाएं टूटी है किसके लिये कहा गया है विषम श्रंखलाएं टूटी है (बेड़ियों के लिये) बेड़ियां, यानि पराधीनता की, दासता का जो शिकंजा था वो शिकंजा टूट गया है खुली समस्त दिशायें – और चारों तरफ आजादी का उल्लास है । यानि आप आजादी दे दीजिए तो हवा बिल्कुल तेज आवेग के साथ बह रही है प्रचंड रूप हो गया है उसका। आज प्रवंजन बन कर चलती युग बंदिनी – यानि युगों युगों से हवा भी बंदी थी (जी मेम) वो हवा भी आजाद हुई है तो अभिप्रेत क्या है कि पूरा देश जो है वो आजादी के हर्षोल्लास से झूम रहा है । प्रश्न चिन्ह बन खडी हो गयी अब सिमटी सीमाएं – मगर आजादी तो हमें मिली लेकिन प्रश्न चिन्ह बन खडी हो गयी यह सिमटी सीमाएं, क्या हुआ आजादी के साथ साथ हमें एक दंश भी मिला, क्या बता सकते हैं आप (पाकिस्तान) बंटवारा, हमने ऐसी आजादी नहीं चाही थी कि देश के टुकडे हो जाये लेकिन अंग्रेजों की जो कूटनीति थी उसके चलते देश का बंटवारा हो गया। तो आजादी जो हमें मिली वो हमारे भीतर शूल बन करके चुभ गयी। आजादी का हर्षोल्लास भी था लेकिन हमारी सीमाएं टूटी, हमारी सीमाएं बहुत कहना चाहिए उसकी परिधि तो लधु हुई ना, एक व्यापक जो देश था उसका भौगोलिक सीमा बदली, तो ये जो सीमाएं हमारी सिमट गयी वो एक बहुत बड़ा सवाल हमारे सामने छोड़ गयी। बहुत बड़ी चुनौती है क्योंकि एक जहर आपस में हमारे बो दिया गया अंग्रेजो के द्वारा। आज पुराने सिंहासन की टूट रही प्रतिमाएं – लेकिन अंग्रेज साम्राज्य शाही का जो पुराना सिंहासन है वो डोल गया है सत्ता का परिवर्तन हो गया है और देश आजाद

है। उठता है तूफान इन्दु तुम दीप्तिमान रहना, पेहरूवे साव – तूफान उठा हुआ है तूफान हर्षोल्लास का भी होता है चारों तरफ हर्षोल्लास है एक तूफान है आपके हृदय में तूफान है नव निर्माण होगा एक आन्दोलन है, तूफान से यहां मतलब एक आन्दोलन है तरह तरह के आन्दोलन तरह तरह की भावनाएं उमड़ रही है, जन कह लीजिए की एक उमड़ रहा है पूरा का पूरा भाव उसमें तरह तरह के, इन्दु तुम दीप्तिमान रहना, इन्दु तुम गौर करियेगा इन्दु तुम दीप्तिमान रहना, ये जो चन्द्रमा है उसे और भी अधिक चमकने की जरूरत है यानि जो नये भारत का पेहरूवा है उसको अपनी दीप्ति से इस देश को और चमकाना है कहने का अभिप्राय है कि देश आजाद हो गया है लेकिन आजादी हमें मिली हैं लेकिन हमारी समस्याएं अभी खत्म नहीं हुयी हैं। हमें नव निर्माण करना है देश का और नव निर्माण के रास्ते बहुत सारी चुनौतियां है ठीक है। ऊंची हुई मशाल हमारी आगे कठिन डगर है –हमारी मशाल जरूर ऊंची हुई है यानि हमें आजादी मिली और विश्व के फलक पर भारत का मस्तक गर्व से ऊंचा हुआ है (ऊंचा हुआ है) क्योंकि हमने किस तरह से आजादी, एक लम्बी यातना झेली और आजादी को प्राप्त किया। शत्रु हट गया लेकिन उसकी छाया – अंग्रेजों को तो हमें भगा दिया लेकिन उसकी छायाओं का डर है। यानि एक लम्बे समय तक हमारा देश अंग्रेज साम्राज्य शाही के अधीन रहा और जव आप अधीन होते हैं तो धीरे धीरे आपका धर जो है वो कमजोर होता गया। तमाम तरह की समस्याएं हैं सामाजिक स्तर पर भी, आर्थिक स्तर पर भी तो उन समस्याओं से हमारा जो समाज है वो जो शोषण था अग्रेज साम्राज्य शाही का उस शोषण के कारण बहुत कमजोर हा गया है। तो जब कोई चीज शोषण के कारण कमजोर हो जाती है तो उसको पुख्ता करने की जरूरत होती है। तो देश को मजबूती देने की अभी जरूरत है । कमजोर हमारा, किन्तु आ रही नई जिन्दगी ये विश्वास अमर है – कवि बताता है कि बहुत ज्यादा आप खुश होइये लेकिन कर्त्तव्य बोध और अतिरिक्त सजगता की जरूरत है लेकिन साथ में कवि के भीतर एक विश्वास है, एक

आस्था है कि एक नई जिन्दगी आ रही है। नई जिंदगी का आगमन निश्चयी होगा इस आस्था से वो अपने पाठक को नहला देना चाहता है। इस विश्वास के साथ वो आगे बढ़ता है। जन गंगा में ज्वार लहर तुम प्रवाहमान रहना, पेहरूवे सावधान रहना – जन गंगा में ज्वार यानि देश के व्यापक फलक पर जो जन समुदाय है उसमें एक उभान है उसमें एक आंदोलन उठ रहा है और आन्दोलन से ही तो आप देखेगें ना कि आगे जब आप में आन्दोलित होगा आपका मन, आन्दोलित होगा नव निर्माण की चेतना आपके भीतर से पैदा होगी तो आप नये भारत का निर्माण करेगें (जी) लहर तुम –एक लहर है उनके भीतर जो लहर का देखिये, लहर जो होती है वो बराबर आगे बढ़ती है उसमें एक जीवन्त चेतना होती है तो देशवासियों के भीतर एक जीवन्त चेतना है और उसमें कर्त्तव्य बोध और अतिरिक्त सजगता और भर देना चाहता है और कवि कहता है कि पेहरूवे तुम सावधान रहना (सावधान रहना) तुम्हें यानि कवि इस पूरी कविता की जो कह लीजिए की मूल ध्वनि वो ये है कि देश वासियों को कभी कर्त्तव्य बोध, अतिरिक्त सजगता की बात से नहला देना चाहता है मतलब वो ये कहना चाहता है कि आप के भीतर हर्षोल्लास आप मनाइये लेकिन देश अभी पूरी तरह से अपनी समस्याओं से मुक्त नहीं हुआ है। हमें देश का नव निर्माण करना है। नव निर्माण के रास्ते बहुत सारी चुनौतियां हैं क्योंकि असमंजस भी है और साम्प्रदायकिता का जहर भी आ गया है बहुत सारी चीजें अंग्रेजी साम्राज्य शाही जो है बो के चली गयी हैं तो उन सब से हमें देश का उद्वार करना है देश के सामने, नये भारत के सामने, नये भारत का स्वतंत्र भारत का जो पेहरूवा है उसका रास्ता बहुत आसान नहीं है बहुत कठिन रास्ते पर उसको चलना है और बहुत सारी चुनौतियों का उसे सामना करना है तो ये पूरी कविता की जो मूल ध्वनि थी वो ये थी। तो इस कविता में आप देखेगें की ये कविता एक विचार गर्भित कविता है (जी) हैं ये छोटे आकार की कविता, यानि बहुत वैसे लम्बी कविता का वितान होता है। दस पेज की कविता ऐसी कविता नहीं है (जी मेम) लधु आकार की कविता ।

लेकिन लधु आकार की कविता जितना गम्भीर विचार इसमें हैं विचार गाम्भीरी के कारण लम्बी कविता के विधान का आदर्श जो है गढ़ लेती है यह कविता। और ये कविता जो है वो देश के प्रति कवि का जो एक जुडाव है वो उसकी द्वो तक है यानि किस तरह देश के प्रति गहरी चिन्ता से यह कविता उपजती है। हूॅ (यस मेम) तो यह कविता का मूल रूप था जो मैंने आपको बताया अब इस कविता से जुडे हुये कुछ सवाल अगर आपके मन में है तो आप पूछ सकते हैं ।

छात्र – मेम ये कविता आजादी के बाद की है तो इसमें राष्ट् भक्ति भी है और राष्ट् चेतना भी है तो इसमें राष्ट् चेतना का कौन सा रूप इसमें दिखाई देता है। मैं यह जानना चाहता हॅू।

डा0कुमुद शर्मा – कौन सा रूप यानि तुम्हारा अगर मैं स्पष्ट करूं और सवाल को यह है कि आजादी से पहले की जो राष्ट्र चेतना है उससे अलग है क्या ये (जी मेम, यस मेम) बहुत अच्छा सवाल महेन्द्र ने किया। आजादी से पहले की जो कविताएं हैं अगर हम देखें तो उस समय देश गुलाम था जैसे कविता, आप सभी जानते है इसको, तो उस समय जैसे भारतेन्दु काल से आप शुरू करिये। तो भारतेन्दु काल में आपको राष्ट्रीयता की दृष्टि से प्रेरणात्मक राष्ट्रीयता का दौर था क्योंकि उस समय पहले लोगों के, जनमानस मे ये बात बैठानी थी कि हमें अंग्रेज सामाज्य शाही जो है वो हमारा दमन कर रहे हैं। हमारा भारत कहीं खो रहा है हमारी अपनी पहचान कहीं खो रही है यानि हम जिन ढ़ांचों में अपने को पहचान रहे थे वो ढांचे तोडे जा रहे हैं तो वहां प्रेरणात्मक राष्ट्रीयता की जरूरत थी और उसके बाद जैसे जैसे विकास होता है स्वाधीनता आन्दोलन आता है तो हमने देखा कि एक संघर्ष मयी चेतना, बलिदानमयी चेतना की जरूरत थी कि देश के लिये हमें मर मिट जाना है । देश जब आजाद हो जाता है तो देश की आजादी के बाद राष्ट्रीयता शब्द आप कहें या देश शब्द जो हैं उतना जो है बिल्कुल खुल करके आप उसको अव्यक्त करें उसकी जरूरत नहीं है। राष्ट्रीय चेतना अगर आप अपने देश के

साथ मानसिक रूप से जुड रहे हैं देश की जो सामायिक चिन्ता है उसके साथ अगर आपका जुडाव है तो वही राष्ट्रीय चेतना है यानि राष्ट्रीय चेतना से तात्पर्य है हमारे देश के साथ हमारी मानसिक संशक्ति, हमारा मानसिक जुडाव और राष्ट्रीय चेतना के लिये किसी भी कविता में किसी भी साहित्य में सामायिक परिवेश बहुत महत्वपूर्ण है सामायिक परिवेश से मतलब है उस समय की तत्कालीन राजनैतिक, सामाजिक स्थितियां। उन स्थितियों के प्रति आपके भावों का जो रिश्ता है, है ना। उन स्थितियों के प्रति आप कैसे सोच रहे हैं आप परेशान है व्यग्र हैं। आप बदलाव चाहते हैं तो देश के साथ जो आपका भावों का रिश्ता है वो आपका राष्ट्रीय आचरण है (जी मेम) जब देश के साथ अपने इसी आत्मीय रिश्ते को आप कविता में बुनते हैं जैसे इस कविता में 15 अगस्त पे देश के साथ कितना गहरा जुडाव है कितनी गहरी मानसिक संशक्ति है गिरिजा कुमार माथुर की वो उभर करके आती है ना सामायिक चिन्ताओं से किस तरह से कवि व्यग्र है उसकी व्यग्रता और बैचेनी भी समझ में आती है तो अगर कवि के भीतर अपनी सामायिक चिन्ताओं के प्रति देश की व्यग्रता और बैचेनी है तो वो भी क्या है राष्ट्रीय चेतना है इस रूप में हम उनकी कविता में राष्ट्रीय चेतना देखेंगें।

अभी आप सुन रहे थे एम0ए0 हिन्दी अंतिम वर्ष के पाठ्यक्रम उत्तरोतर कविता के अन्तर्गत गिरिजा कुमार माथुर पर व्याख्यान । व्याख्याता थीं दिल्ली यूनीवर्सिटी के हिन्दी विभाग की एसोसिएट प्रोफेसर डा0 कुमुद शर्मा। ये प्रस्तुति कामनवेल्थ एजुकेशनल मीडिया सेन्टर फार एशिया की थी जिसमें सहयोग दिया वन वर्ल्ड साउथ एशिया ने, प्रस्तुतकर्ता करूणा श्रीवास्तव